लोक कथाओं में ईसाई धर्म–2

संकलनकर्ता
सुषमा गुप्ता

Book Title: Lok Kathaon Mein Isai Dharm-2 (Christianity in Folktales-2)
Cover Page picture : Ethiopian Crosses
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail : sushmajee@yahoo.com
Website : www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm
Read More such stories at: www.scribd.com/sushma_gupta_1

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा

दिसम्बर 2018

Contents

सीरीज़ की भूमिका 4
लोक कथाओं में ईसाई धर्म–2 5
1 रिचर्ड और उसके ताश के पत्ते 7
2 चालाक पत्नी 10
3 ताश खेलने वाला–1 14
4 दुनियॉ का जन्म 34
5 डाक्टर का बेटा और सॉपों का राजा 40

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **1500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **400** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
दिसम्बर **2018**

लोक कथाओं में ईसाई धर्म–2

दुनियॉ में बहुत सारे धर्म हैं जैसे हिन्दू धर्म, इस्लाम धर्म, ईसाई धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म, सिख धर्म, पारसी धर्म। इन सब धर्मों में हिन्दू धर्म सबसे अधिक पुराना है। करीब **2500** साल पहले बौद्ध और जैन धर्म महात्मा बुद्ध और महावीर जी ने शुरू किये। **2000** साल पहले ईसाई धर्म जीसस काइस्ट ने शुरू किया और फिर उसके **600** साल बाद मुहम्मद साहब ने अरब में इस्लाम धर्म शुरू किया। सिख धर्म भारत में **15**वीं सदी में गुरू नानक ने शुरू किया।

जानवरों, परियों, राजाओं, सौतेली मॉओं, आदि की लोक कथाओं के अलावा पश्चिमी देशों की कई लोक कथाऐं ईसाई धर्म पर भी आधारित हैं। उनमें ईसाई धर्म साफ दिखायी देता है। ऐसी ही कुछ लोक कथाऐं जिनमें ईसाई धर्म साफ झलकता है हमने तुम्हारे लिये यहॉ संकलित की हैं और उन्हें यहॉ प्रस्तुत कर रहे हैं।

इससे पहले हमने लोक कथाओं में ईसाई धर्म की एक पुस्तक प्रकाशित की थी – "लोक कथाओं में ईसाई धर्म–**1**" जिसमें यूरोप और अमेरिका के देशों में कही सुनी जाने वाली ईसाई धर्म पर आधारित लोक कथाऐं दी गयी थीं। अब हम ईसाई धर्म पर आधारित लोक कथाओं की यह दूसरी पुस्तक प्रकाशित कर रहे हैं जिसमें ईसाई धर्म की संसार के दूसरे देशों में कही सुनी जाने वाली लोक कथाऐं दी जा रही हैं।

आशा है ईसाई धर्म की लोक कथाओं का यह संग्रह भी इसके पहले सग्रह की तरह तुम लोगों को बहुत पसन्द आयेगा और तुम्हारा भरपूर मनोरंजन करेगा।

1 रिचर्ड और उसके ताश के पत्ते[1]

ईसाई धर्म की यह लोक कथा कैनेडा देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक दिन रिचर्ड नाम का एक आदमी एक चर्च के पास से गुजर रहा था। चर्च में होली मास[2] की पूजा हो रही थी सो वह चर्च में अन्दर चला गया और दीवार के पास वाली एक खाली सीट पर जा कर बैठ गया।

वहॉ उसने चर्च की किताब निकालने की बजाय अपनी जेब से अपने ताश के पत्ते निकाल लिये और उनको उलटने पलटने लगा।

उसके पास ही एक सिपाही बैठा हुआ था। उसने इशारों से रिचर्ड को कई बार समझाने की कोशिश की कि या तो वह अपने ताश के पत्ते छोड़ कर चर्च की किताब हाथ में उठा ले और या फिर चर्च छोड़ कर चला जाये क्योंकि चर्च में बैठ कर ताश के पत्ते हाथ में लेना अच्छा नहीं लगता।

पर रिचर्ड ने उसके इशारों पर कोई ध्यान नहीं दिया।

मास पूजा खत्म होने के बाद चर्च का पादरी और सिपाही दोनों ही रिचर्ड को समझाने के खयाल से रिचर्ड के पास आये तो रिचर्ड

[1] Richard and His Deck of Cards – a folktale of French Canada, North America

[2] Christians' Holy Mass – a kind of their worship

बोला — "फादर, आप अगर मुझे कुछ बोलने की इजाज़त दें तो मैं कुछ कहूँ।"

पादरी बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं। ठीक है रिचर्ड, कहो।"

रिचर्ड ने ताश के पत्तों में से एक दुग्गी निकाली और बोला — "यह दुग्गी मेरे लिये बाइबिल के दो टैस्टामैन्ट[3] जैसी है।"

फिर उसने एक तिग्गी निकाली और बोला — "यह तिग्गी मेरे लिये होली ट्रिनिटी[4] के तीन लोगों जैसी है।"

फिर उसने एक चौग्गी निकाली और कहा — "यह चौग्गी मेरे लिये चार इवान्जलिस्ट के जैसी है, और यह पंजा मेरे लिये मोसेस की पॉच किताबों[5] जैसा है।

और यह छक्का भगवान के बनाये वे छह दिन हैं जिनमें उसने आसमान और धरती बनाये। और यह सत्ता उस सातवें दिन को बताता है जिसमें उसने आराम किया। यह अट्ठा उन आठ लोगों को बताता है जो बाढ़ में बच गये थे।

यह नहला नौ बेवफा कोढ़ियों को दिखाता है और यह दहला भगवान के मोसेस को दिये हुए टैन कमान्डमेन्ट्स[6] हैं। यह रानी स्वर्ग की रानी है, और यह राजा वह राजा है जिसकी मैं सेवा करता

[3] There are two Testaments in the Bible – Old Testament and New Testament.

[4] Holy Trinity – God, Father, and Holy Spirit

[5] Moses has written five books, he is referring to here

[6] Ten Commandments – Moses got them directly from God

हूँ। और यह इक्का वह एक भगवान है जिसकी मैं पूजा करता हूँ।"

पादरी बोला — "पर रिचर्ड तुम गुलाम को तो भूल ही गये।"

रिचर्ड बोला — "नहीं फादर, मैं गुलाम को भूला नहीं हूँ। उसको तो मैं भूल ही नहीं सकता। असल में उसको तो सबसे बाद में ही आना था। वह गुलाम मुझ जैसा बेवकूफ है और साथ में इस सिपाही जैसा भी।"

इतना कह कर रिचर्ड चर्च के बाहर चला गया और पादरी उसको देखता ही रह गया।

2 चालाक पत्नी[7]

इथियोपिया के एक गॉव में एक पति पत्नी रहते थे। वे अपना काम बड़ी मेहनत और ईमानदारी के साथ करते थे परन्तु कभी किसी गरीब को दान में एक पैसा भी नहीं देते थे।

उनके कोई बच्चा भी नहीं था सो उनका खर्चा भी बहुत कम था इसलिये उनका काफी पैसा बच जाया करता था।

एक दिन पति बाजार गया तो उसने एक गाय देखी। गाय तन्दुरुस्त और बड़ी थी सो उसने उसे खरीद लिया। वह गाय उसने **50** डालर की खरीदी।

बाद में उसने अपनी पत्नी के लिये एक डालर की एक मुर्गी भी खरीदी और घर वापस आ गया। पत्नी इन दोनों को देख कर बहुत खुश थी क्योंकि गाय खूब दूध देती थी और मुर्गी रोज अंडे।

एक रविवार को पति अपने चर्च के पादरी से मिलने गया। और बातों के साथ साथ उन दोनों ने उस दूध के बारे में भी बात की जो उनकी गाय देती थी और उन अंडों के बारे में भी बात की जो उनकी मुर्गी देती थी।

पादरी ने कहा "तुम अमीर तो हो पर बहुत ही मतलबी हो क्योंकि तुमने गॉव के किसी गरीब आदमी की कभी कोई सहायता नहीं की। तुमको उनकी सहायता जरूर करनी चाहिये। या तो

[7] Cunning Wife - a folktale of Jablawi Tribe of Ethiopia, Africa

तुमको उन लोगों को कुछ दूध और अंडे देने चाहिये और या फिर कुछ पैसे।"

पादरी की यह बात पति की समझ में आ गयी। वह घर आ कर पत्नी से बोला कि वह गाय और मुर्गी को बाजार में ले जा कर बेच दे।

उसने साथ में उससे यह भी कहा कि वह गाय को बेच कर उसका पैसा गरीबों में बॉट दे और मुर्गी को बेच कर उसका पैसा ला कर उसको दे दे।

पत्नी को पति की यह बात बिल्कुल पसन्द नहीं आयी परन्तु वह पति के कहने को टाल भी नहीं सकती थी। वह सोचती रही कि उसे क्या करना चाहिये जिससे सॉप भी मर जाये और लाठी भी न टूटे। आखिर उसको एक तरकीब सूझ ही गयी।

अगले दिन वह गाय और मुर्गी ले कर बाजार गयी और उनको बाजार में बेचने बैठ गयी। एक आदमी गाय खरीदना चाहता था सो उसने उस औरत से पूछा कि गाय कितने की है। औरत बोली "एक डालर की।"

उस आदमी को यह सुन कर बहुत ही आश्चर्य हुआ कि ऐसा कैसे है। उसने कहा "मुझे यहॉ रहते हुए कितने साल हो गये हैं पर मैंने ऐसा कभी नहीं सुना कि गाय का दाम एक डालर हो। क्या यह गाय दूध देती है?"

वह औरत बोली "हॉ हॉ बिल्कुल देती है, क्यों नहीं। परन्तु एक शर्त है कि अगर तुम यह गाय खरीदोगे तो तुमको साथ में यह मुर्गी भी खरीदनी पड़ेगी।"

आदमी ने पूछा — "और मुर्गी की कीमत क्या है?"

औरत ने जवाब दिया — "पचास डालर।"

उस आदमी को यह सब झमेला सा लग रहा था परन्तु **51** डालर में गाय और मुर्गी का सौदा बुरा नहीं था सो उसने **51** डालर दे कर गाय और मुर्गी दोनों खरीद लीं। औरत ने खुशी खुशी **51** डालर अपनी जेब के हवाले किये और सीधी चर्च गयी।

वहॉ उसको एक गरीब औरत बैठी हुई दिखायी दे गयी। उसने उसको गाय का एक डालर दान में दिया और घर आ कर मुर्गी के **50** डालर अपने पति के हाथ में थमा दिये।

पति को इतने सारे डालर देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने पूछा "क्या तुमने गाय को बेच कर उसके पैसे दान में नहीं दिये या तुमको एक मुर्गी के इतने सारे पैसे मिल गये?"

पत्नी बोली — "मैंने दोनों काम कर दिये। गाय को बेच कर उससे मिले पैसे मैंने दान में दे दिये और मुर्गी के मुझे इतने सारे पैसे मिल गये वह मैं घर ले आयी।"

पति की अभी भी कुछ समझ में नहीं आया तो पत्नी ने उसे सब साफ साफ बता दिया कि वह गाय एक डालर की बेच कर उसने

वह एक डालर दान में दे दिया और मुर्गी को पचास डालर में बेच कर वह पचास डालर घर ले आयी।

इस तरह इस चालाक पत्नी ने अपने पति का कहना भी माना और पैसे भी बचाये।

3 ताश खेलने वाला–1[8]

यह लोक कथा अफ्रीका महाद्वीप के पूर्व में स्थित टापुओं पर बसे लोगों में कही सुनी जाती है। ताश खेलने वाले की यह लोक कथा एक बहुत ही मजेदार लोक कथा है। इसमें जीसस एक ताश खेलने वाले को वरदान दे कर कैसे फॅस जाते हैं यह देखने वाली बात है। तो आओ पढ़ते हैं यह कथा हिन्दी में।

एक बार एक आदमी था जिसको लोग ताश खेलने वाला कहते थे और यही वह करता भी था। वह कहीं भी जाता था तो उसकी जेब में ताश रहते। वह उनके साथ ताश खेलता और हर एक को हरा देता था।

वह सड़क पर से किसी को भी पकड़ लेता था – वह बच्चा हो या बड़ा या कोई और, और उससे कहता कि "आओ ताश खेलें।"

वह हमेशा पैसे के लिये ताश खेलता था। कोई बच्चा भी जो किसी दूकान जाता होता तो वह उसको बुला लेता। क्योंकि उसके पास पैसे होते थे सो वह उसके साथ खेलता और वह बच्चा बेचारा तुरन्त ही हार जाता और वह उसके पैसे ले लेता।

[8] The Cardplayer – a folktale from Reunion, Africa. Adapted from the book : "Indian Ocean Folktales: Madagaskar, Comoros, Mauritius, Reunion, Seychelles". By Germain Elizabeth. Retold by Christian Bard.

उसका एक छोटा सा घर था और उसमें उसका एक छोटा सा रसोईघर था। वहॉ वह अपने हाथ से ही खाना बनाता था। उसके पास एक बरतन था। उसके उस बरतन में छह–सात लोगों का खाना बन जाता था।

वह अपना चावल नापता था और उसको उस बरतन में डाल कर सुबह सुबह आग पर रख देता था। फिर वह ताश खेलता था। जब दिन के **11** बजते थे और अगर वह जीत जाता था तो वह अपना सारा चावल खा लेता था।

शाम को फिर वह चावल बनने के लिये रखता था और बन जाने पर खा लेता था। अगर वह अपना सुबह का चावल **11** बजे खत्म नहीं कर पाता था तो वह उसको शाम के लिये रख देता था। इस तरह से उसको ताश खेलने के लिये ज़्यादा समय मिल जाता था।

एक दिन वहॉ रहने वालों में से एक आदमी ने दूसरे आदमी से कहा — "जाओ और भगवान से मिलो और उससे कहो "भगवान तुम धरती पर आओ और इस ताश खेलने वाले को यहॉ से ले जाओ। वह हम सबको बहुत तंग करता है। यह सड़क पर हर जगह ताश खेलता है।

यह बच्चों और बड़ों को एक जैसा ही समझता है। सबके साथ ताश खेलता है और सबको हरा देता है। अच्छा होगा अगर भगवान आयें और इसको ले जायें तो।"

दूसरा आदमी बोला — "ठीक है। मैं जा कर भगवान से मिलता हूँ।

सो वह भगवान के पास गया और बोला — "भगवन, मैं आपसे मिलने आया हूँ। हमारे यहाँ धरती पर एक आदमी है जो सबको ताश खेल कर बहुत तंग करता है।

वह एक तरफ ऊपर जाता है और दूसरी तरफ नीचे आता है। उससे सब परेशान रहते हैं। वह लोगों को काम नहीं करने देता और बच्चा हो या बड़ा सबसे ताश खेल कर उनके पैसे ले लेता है।

कोई बच्चा बेचारा पैसे ले कर कुछ खरीदने के लिये दूकान जाता है तो वह उसको ताश खेलने के लिये बहका लेता है और फिर उसको हरा कर उसके सारे पैसे ले लेता है।"

भगवान ने पूछा — "क्या उसका नाम ताश खेलने वाला है?"

वह आदमी बोला — "जी हाँ।"

भगवान ने कहा — "वह आयेगा, वह यहाँ जरूर आयेगा। मैं खुद देखने आता हूँ कि जो कुछ तुम मुझसे कह रहे हो क्या यह सब सच है?"

भगवान ने "होली घोस्ट"[9] और सेन्ट पीटर[10] से बात की और कहा "चलो इस ताश खेलने वाले को देख कर आते हैं। अगर जो

[9] Holy Ghost – Christianity believes in Trinity – Father, Son and the Holy Ghost (Holy Spirit), each person itself being God.

[10] Saint Peter (Simon Peter) was one of the 12 Apostles of Jesus Christ and in popular culture is depicted holding the key of Kingdom of Heaven, sitting at the Pearly Gates to allow entry in the Kingdom of Heaven. See the names of Jesus' 12 disciples at the end of the book.

कुछ यह आदमी कह रहा है सच हुआ तो हमें उसे धरती से हटाना ही पड़ेगा।"

सो वे तीनों धरती की तरफ चल दिये। जब वे उस ताश खेलने वाले के घर पहुँचे तो शाम के **5** बज रहे थे। उन्होंने उससे पूछा — "क्या तुम्हीं ताश खेलने वाले हो?"

वह बोला — "हॉ, क्यों?"

वे बोले — "हमने तुम्हारे बारे में बहुत सुना है पर अब देर हो गयी है। क्या तुम हमको रात को खाना और ठहरने की जगह दे सकते हो?"

"हॉ हॉ क्यों नहीं। पर तुम देख रहे हो न कि मेरा कितना छोटा सा घर है। यह मेरा खाना बनाने का बरतन है और मेरे पास बस एक डिब्बा ही चावल है। तुम लोग इधर सो सकते हो, जैसे भी चाहो और फिर हम सब यह चावल मिल कर खायेंगे। ठीक है?"

तीनों एक साथ बोले — "ठीक है। हमें मंजूर है।"

सो उस ताश खेलने वाले ने अपना चावल नापने वाला बरतन उठाया। उससे नाप कर चावल लिये, उनको धोया और फिर उस बरतन को आग पर रख दिया। बाकी सब लोग बात करने लगे।

जब चावल पक गये तो उन तीनों ने पूछा — "और वह चावल? क्या वह पका हुआ चावल नहीं है?"

बरतन में चावल पक कर उठ रहा था। सो वह ताश खेलने वाला उठ कर गया। उसने उसमें से दो प्याले चावल निकाले। अब वह बरतन चावल से आधा भरा हुआ था।

उसने देखा और बोला — "यह चावल तो बन गया है पर अभी बहुत सारा चावल बाकी है। मैं इसको कैसे परसूँ?"

किसी ने कोई जवाब नहीं दिया। उन्होंने थोड़ा सा चावल ले लिया और उसे खाने लगे। चारों का पेट भर गया।

वे तीनों उस ताश खेलने वाले से बहुत खुश थे। उन्होंने कहा कि वह नम्रता में, अच्छे बरताव में और यह देखने में कि दूसरे लोगों ने ठीक से खाया है या नहीं सबसे पहले नम्बर पर आता है।" और वे सब सोने के लिये लेट गये।

अगली सुबह जब वे उठे तो उन्होंने उस ताश खेलने वाले से पूछा कि वे उसको वहाँ खाने और सोने के कितने पैसे दे दें।

वह बोला — "जो थोड़ा बहुत मेरे पास था उसी में से तुम लोगों ने यहाँ खा पी लिया। इसके अलावा तुम लोग इतनी छोटी सी जगह में सो भी लिये। और मेरे ख्याल से तो तुम लोग ठीक से सो भी नहीं पाये होगे। सो इस सबका उनको कोई पैसा देने की कोई जरूरत नहीं है।"

वे तीनों बोले — "नहीं नहीं, हम लोगों ने पेट भर कर खाया और पूरा पूरा ठीक से सोये। पर बस अब यह बता दो कि इस सब का हम तुम्हें कितना पैसा दे दें।"

वह ताश खेलने वाला बोला कि वह भी ठीक से सोया।

भगवान ने कहा — "अगर तुम हमसे कोई पैसा नहीं ले रहे तो मुझसे अपने लिये कोई मेरी कोई कृपा ही माँग लो।"

वह बोला — "कृपा? मैं तुमसे क्या कृपा माँगू?"

भगवान बोले — "कुछ भी। जो भी तुम्हारी इच्छा हो। चलो, मैं तुमको सन्तोष दूँगा।"

ताश खेलने वाला बोला — "तुम वह बैन्च देख रहे हो न? तो तुम्हारी कृपा के लिये मैं तुमसे यह माँगता हूँ कि जो कोई भी उस बैन्च पर बैठे वह वहीं चिपक जाये।"

भगवान बोले — "ठीक है ऐसा ही होगा।"

होली घोस्ट बोले — "अब तुम मुझसे भी कुछ माँग लो।"

"अरे तुमसे भी? मैं तुमसे क्या माँगू?" फिर कुछ सोचते हुए बोला — "अच्छा ठीक है तुम मुझको यह दो कि जब कोई मेरे दरवाजे में हो और वह उस दरवाजे का सहारा ले कर खड़ा हो तो वह वहाँ से फिर हिल भी न सके। वह वहीं अटक जाये जब तक मैं उसको वहाँ से न हटाऊँ।"

होली घोस्ट बोले — "ठीक है जैसा तुम चाहो। ऐसा ही होगा।"

अब सेन्ट पीटर की बारी थी। उन्होंने कहा — "अब मेरा नम्बर है। बोलो, तुम मुझसे क्या माँगते हो?"

ताश खेलने वाला बोला — "तो क्या तुम तीनों मेरे ऊपर कृपा करने वाले हो? ठीक है। तुम वह सन्तरे का पेड़ देख रहे हो न? अगर कोई उस पेड़ पर मुझसे बिना पूछे चढ़े तो वह उस पर से तब तक नीचे न आ सके जब तक मैं न कहूँ।"

सेन्ट पीटर बोले — "ठीक है ऐसा ही होगा।"

इस तरह तीनों उस ताश खेलने वाले को तीन वरदान दे कर चले गये। कुछ दिनों बाद भगवान ने अपने एक मृत्यु दूत[11] को बुलाया और उसको धरती पर से ताश खेलने वाले को स्वर्ग लाने के लिये भेजा।

मृत्यु दूत नीचे धरती पर आया और ताश खेलने वाले के घर पहुँचा। वहाँ जा कर उसने ताश खेलने वाले से कहा कि उसको भगवान ने बुलाया है।

ताश खेलने वाले ने पूछा — "पर उसने मुझे बुलाया ही क्यों है?"

"यह तो मुझे मालूम नहीं पर उन्होंने मुझे तुम्हें लाने के लिये भेजा है।"

[11] Translated for the word "Death Angel".

ताश खेलने वाले ने कुछ सोचा और उससे अपने घर के सामने पड़ी बैन्च पर बैठने के लिये कहा कि वह वहॉ बैठे और वह अभी घर से तैयार हो कर आता है।

सो मृत्यु दूत बाहर उसकी बैन्च पर बैठ गया और ताश खेलने वाला घर के अन्दर तैयार होने चला गया। कुछ देर बाद वह तैयार हो कर आया और बोला — "चलो उठो मैं तैयार हूॅ।"

मृत्यु दूत ने उस बैन्च से उठने की बहुत कोशिश की पर वह तो उससे उठ ही नहीं सका। वह तो उससे चिपक गया था। उसने बहुत कोशिश की पर वह तो वहॉ से किसी तरह हिल भी नहीं पा रहा था।

उसने उससे कहा — "अरे यह क्या। मैं तो यहॉ से उठ ही नहीं पा रहा। कोई मुझे यहॉ से उठाओ।"

ताश खेलने वाला बोला — "जब तक तुम मुझसे यह वायदा नहीं करोगे कि तुम मुझे भगवान के पास नहीं ले जाओगे मैं तुम्हें यहॉ से नही उठाऊॅगा।"

मृत्यु दूत को उससे यह वायदा करना ही पड़ा तभी ताश खेलने वाले ने उसको वहॉ से उठाया वरन अपने आप तो वहॉ से वह कभी उठ ही नहीं सकता था। वहॉ से उठ कर वह सीधा भगवान के पास गया।

भगवान ने पूछा — "कहॉ है वह ताश खेलने वाला?"

मृत्यु दूत ने भगवान से जा कर सारा हाल बताया तो भगवान ने पूछा कि कि तुम वहॉ उस बैन्च के ऊपर बैठे ही क्यों थे।

वह बोला — "उसने मुझसे बैठने के लिये कहा था मैं वहॉ इसलिये बैठा था। मुझे क्या पता था कि उस पर बैठ कर मैं वहॉ चिपक जाऊॅगा। और उसके बाद तो मैं वहॉ पर चिपक गया।

मैं तो वहॉ से उठ ही नहीं सका जब तक उसने मुझे अपने आप नहीं उठाया और उसने मुझे तब तक उठाया नहीं जब तक उसने मुझसे यह वायदा नहीं ले लिया कि मैं उसे आपके नहीं ले जाऊॅगा।

जब मैंने उससे यह वायदा किया कि मैं उसको अपने साथ नहीं ले जाऊॅगा तब कहीं जा कर उसने मुझे उस बैन्च से आजाद किया।"

"ठीक है अब तुम फिर से जाओ और उस ताश खेलने वाले को यहॉ ले कर आओ। मैं और कुछ नहीं जानता। मैं तुमको हुकुम देता हूॅ और तुम मेरे हुकुम का पालन करो।"

सो वह फिर ताश खेलने वाले के पास गया तो ताश खेलने वाला उसको फिर से आया देख कर बोला — "अरे तुम यहॉ फिर से?"

"हॉ भगवान ने मुझसे कहा है कि अबकी बार मैं तुमको ले कर ही आऊॅ। और इस बार कोई सौदा नहीं।"

ताश खेलने वाले ने मुॅह बना कर कहा — "हुॅह, कोई सौदा नहीं।"

मृत्यु दूत बोला — "अबकी बार तुमको मेरे साथ चलना ही पड़ेगा।"

ताश खेलने वाला बोला — "मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊँगा। मैंने कह दिया न।"

"क्या तुम मेरे साथ नहीं जा रहे हो? यह नहीं हो सकता। तुमको चलना ही पड़ेगा। उन्होंने मुझसे तुमको साथ लाने के लिये कहा है। कल तुमने मुझे उस छोटी सी बैन्च पर पकड़ लिया था। मैंने भगवान को सब बता दिया तो उन्होंने मुझे फिर से यहाँ भेज दिया।"

"ठीक है तुम यहाँ बैठो।"

"क्या? उस बैन्च पर?"

"हाँ हाँ। ठीक है। तुम अगर बैन्च पर नहीं बैठना चाहते तो न बैठो घर के बाहर मेरे दरवाजे पर खड़े हो कर मेरा इन्तजार करो मैं अभी आया।"

मृत्यु दूत उसके दरवाजे के सहारे खड़ा हो गया। जैसे ही वह वहाँ खड़ा हुआ तो वह तो वहाँ उसके घर के दरवाजे से चिपक गया।

ताश खेलने वाला बोला — "यह दरवाजा तुमको पकड़ कर रखेगा तब तक मैं ज़रा ताश खेल कर आया।"

मृत्यु दूत बोला — "ताश खेलने से क्या मतलब है तुम्हारा? मैंने कहा न कि कोई सौदा नहीं बस तुमको मेरे साथ चलना है। अभी।"

ताश खेलने वाला बोला — "मैं तुम्हारे साथ नहीं जा रहा। तुम यहीं ठहरो।"

यह सुन कर मृत्यु दूत तो पागल सा हो गया। उसने अपने आपको वहॉ से छुड़ाने की बहुत कोशिश की "कोई सौदा नहीं ओ ताश खेलने वाले। मुझे जाने दो। मैं जा कर यह बात भगवान को बता दूँगा तो वह मुझे फिर से तुमको लाने के लिये यहॉ भेज देंगे।"

ताश खेलने वाले ने दरवाजे से कहा — "देखो यह यहॉ खड़ा है इसको जाने मत देना।"

फिर वह मृत्यु दूत से बोला — "अगर तुम मुझे ले कर जाना चाहते हो तो मैं तुमको यहॉ से नहीं जाने दूँगा।"

मृत्यु दूत ने फिर कहा — "अच्छा तो मुझे तो जाने दो। मैं भगवान से जा कर कहूँगा कि मेरे साथ क्या हुआ था। और मैं तुमको भी नहीं ले जाऊँगा।"

ताश खेलने वाला बोला — "अगर मैं तुमको छोड़ दूँगा तो तुम मुझे अपने साथ ले जाओगे। मुझे मालूम है।"

मृत्यु दूत फिर बोला — "नहीं मैं वायदा करता हूँ कि मैं तुमको अपने साथ बिल्कुल नहीं ले जाऊँगा। लेकिन अब तो मुझे जाने दो।"

ताश खेलने वाला बोला — "अगर तुम मुझे नहीं ले जाओगे तो मैं तुमको छोड़ देता हूँ। जाओ यहॉ से चले जाओ। अब तुम उस दरवाजे से चले जाओ।"

मृत्यु दूत ने दरवाजा छोड़ दिया और वह वहॉ से चला गया। वह वहॉ से भगवान के पास पहुॅचा तो भगवान ने पूछा — "अरे यह क्या तुम फिर से बिना ताश खेलने वाले को लिये आ गये?"

"भगवन मैं बताता हूॅ कि मेरे साथ क्या हुआ।"

"मैं दावे के साथ कह सकता हूॅ कि तुम वहॉ गये होगे और जा कर उसकी बैन्च पर बैठ गये होगे।"

"नहीं भगवन इस बार मैं उसकी बैन्च पर नहीं बैठा बल्कि उसके दरवाजे ने मुझे पकड़ लिया। मैं उसके दरवाजे में फॅस गया।"

भगवान ने पूछा — "क्या मैंने तुमको उसके दरवाजे में फॅसने के लिये भेजा था। मैने तुमको ताश खेलने वाले को लाने के लिये भेजा था। फिर जाओ और ताश खेलने वाले को ले कर आओ। अबकी बार कोई सौदा नहीं। बस उसको ले कर आओ। उसको धरती पर से उठा कर लाना है। समझे।"

मृत्यु दूत बोला — "मैं क्या करता भगवन मैं उसके दरवाजे में फॅस गया था। मैंने उससे छूटने की बहुत कोशिश की पर मैं छूट ही नहीं सका सो मुझे उससे वायदा करना पड़ा कि मैं उसको नहीं ले जाऊॅगा ताकि कम से कम मैं उसके दरवाजे से तो छूट सकूॅ।"

भगवान बोले — "ठीक है अब भागो यहॉ से। और यह आखिरी बार है। अबकी बार उसको ले कर ही आना है। अबकी बार ख्याल रखना।"

सो वह मृत्यु दूत फिर धरती पर गया और फिर से ताश खेलने वाले के घर पहुँच कर उसको आवाज लगायी। ताश खेलने वाला बोला — "अरे मृत्यु दूत तुम फिर से यहाँ? अब तुम्हें क्या चाहिये?"

"भगवान ने मुझे यहाँ तुमको ले आने के लिये भेजा है। अबकी बार तो तुमको हर हाल में चलना ही है।"

"नहीं, मैं नहीं जा रहा।"

"नहीं का क्या मतलब है अबकी बार तो तुमको चलना ही है। सुना तुमने?"

"अगर तुम उस बैन्च पर नहीं बैठना चाहते तो न बैठो। अच्छा तो दरवाजे के पास खड़े हो जाओ।"

"क्या वहाँ? ताकि फिर मैं वहाँ से हिल भी न सकूँ? नहीं नहीं बस तुम मेरे साथ अभी चलो।"

सो वह बाहर ही खड़ा रहा। न तो वह बैन्च पर बैठा और न ही वह दरवाजे के पास खड़ा हुआ। वहीं पास में सन्तरे का पेड़ था और उस पर पके सन्तरे लगे हुए थे।"

ताश खेलने वाला बोला — "अगर हम वाकई जा रहे हैं तो मुझे क्या करना होगा। ऐसा करो, देखो इस पके सन्तरे के पेड़ को देख रहे हो न। जब तक मैं तैयार होता हूँ तुम इस पेड़ पर चढ़

जाओ और वहॉ से कुछ सन्तरे ही तोड़ लो। चार सन्तरे तोड़ लेना – दो अपने लिये और दो भगवान के लिये।"

सो मृत्यु दूत उस पेड़ पर चढ़ गया। जब वह ऊपर तक पहुँच गया तो ताश खेलने वाला बोला — "ठीक है अब मैं ताश खेलने जा रहा हूँ। मैं अभी आता हूँ।"

"क्या? मैं नीचे उतर रहा हूँ फिर साथ साथ चलते हैं।"

"नहीं तुम नीचे नहीं उतर रहे।"

"क्या? मैं नीचे नहीं उतर रहा?"

"हॉ, तुम नीचे नहीं उतर रहे। तुम यहीं मेरा इन्तजार करो मैं अभी ताश खेलने जा रहा हूँ। जब मैं तय कर लूँगा कि मुझे क्या करना है तब मैं तुम्हें बताऊँगा तब हम चलेंगे। और तभी मैं तुम्हें यहॉ से आज़ाद करूँगा।"

मृत्यु दूत बोला — "ओ ताश खेलने वाले मैं तुमसे कह रहा हूँ कि मुझे जाने दो। पहले तुमने मुझे इस छोटी सी बैन्च पर पकड़ा, फिर तुमने मुझे दरवाजे में पकड़ा और अब तुमने मुझे इस सन्तरे के पेड़ पर पकड़ रखा है।

यह सब तो ठीक है, पर यह तो बताओ तुम्हें चाहिये क्या? भगवान ने मुझसे कहा है कि तुम यहॉ लोगों को परेशान करते हो सो मैं तुमको यहॉ से ले जाऊँ।"

ताश खेलने वाला बोला — "तुमने क्या कहा कि भगवान ने कहा है कि मैं लोगों को परेशान करता हूँ? मैं किसी को परेशान नहीं करता। मैं भगवान को भी परेशान नहीं करता। मैं किसी को परेशान नहीं करता सिवाय अपने साथ ताश खेलने वालों के।"

"ठीक है, तो मुझे तो जाने दो। मैं तुमको बता रहा हूँ कि मैं जा रहा हूँ।"

ताश खेलने वाला बोला — "नहीं, तुम मुझे साथ ले कर नहीं जा सकते। मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊँगा। तुम मुझे ले जाओगे इसलिये मैं तुम्हें यहाँ से जाने भी नहीं दे सकता।"

पर बाद में मत्यु दूत को ताश खेलने वाले से एक वायदा करना पड़ा कि अगर उसने उसको छोड़ दिया तो वह उसको ले कर नहीं जायेगा और भगवान के पास जा कर उनको यह बतायेगा कि वह धरती पर कैसे पकड़ा गया था।

ताश खेलने वाला राजी हो गया तो उसने उसको सन्तरे के पेड़ पर से नीचे बुला लिया। मृत्यु दूत वहाँ से किसी तरह नीचे उतर कर सन्तरे ले कर भगवान के पास चला गया।

जब वह भगवान के पास पहुँचा तो भगवान ने उससे पूछा — "कहाँ है वह ताश खेलने वाला?"

मृत्यु दूत बोला — "भगवन, इस बार उसने मुझे अपने सन्तरे के पेड़ में पकड़ लिया और फिर मुझे वह छोड़ ही नहीं रहा था।

फिर भी उसने आपके लिये दो सन्तरे भेजे हैं और कहा है कि मैं इनको आपको दे दूँ।"

भगवान बोले — "मुझे किसी सन्तरे की जरूरत नहीं है। और मैंने तुमको वहाँ सन्तरे तोड़ने के लिये भी नहीं भेजा था। क्या मैंने तुमसे यह कहा था कि तुम उसके सन्तरे के पेड़ पर चढ़ो? मुझको तो बस वह ताश खेलने वाला चाहिये और कुछ नहीं। और तुम उसको यहाँ ला नहीं रहे।"

सो वह अबकी बार चौथी बार धरती पर गया। इस बार उसको बहुत सावधान रहना था। भगवान ने भी उससे सावधान रहने के लिये कहा और कहा कि अगर वह सावधान नहीं रहा तो वह उसको वहाँ ले कर नहीं आ पायेगा।

सो वह फिर से ताश खेलने वाले के घर पहुँचा और जा कर उसको आवाज लगायी।

ताश खेलने वाला बाहर निकल कर आया और बोला — "अरे मृत्यु दूत तुम फिर से? तुम यहाँ फिर से वापस क्यों आ गये?"

मृत्यु दूत बोला — "आज तो तुमको जाना ही पड़ेगा। भगवान ने मुझसे कहा है कि आज मैं तुमको यहाँ से ले कर ही आऊँ। इस बार कोई सौदा नही – न कोई बैंच और न कोई दरवाजा और न ही कोई सन्तरे का पेड़। बस तुमको मेरे साथ चलना है।"

ताश खेलने वाले ने कहा — "ठीक है ठीक है, अगर मुझको तुम्हें ले कर जाना ही है तो मुझे पहले अपने ताश के पत्ते तो ले आने दो।"

सो वह अन्दर गया और अपने ताश निकल कर ले लाया। उनको उसने अपनी जेब में रख लिये। फिर उसने एक थैला उठाया उसको अपने कन्धे पर डाला और वह इस तरह उस मृत्यु दूत के पीछे पीछे चल दिया।[12]

चलते चलते रास्ते में कुछ दूरी पर ताश खेलने वाले को ग्रैन इ्याब[13] दिखायी दे गया तो वह बोला — "ज़रा रुको ओ मृत्यु दूत, मैं चलते चलते इसके साथ ज़रा एक ताश की एक बाज़ी[14] खेल लूँ। अभी चलता हूँ।"

मृत्यु दूत बोला — "नहीं मुझे बहुत देर हो जायेगी। तुम मेरे साथ अभी चलो।"

ताश खेलने वाला गिड़गिड़ा कर बोला — "बस एक मिनट, केवल एक बाज़ी।"

कह कर वह ग्रेन इ्याब के पास पहुँच गया और उससे बोला — "आजा एक बाज़ी खेलते हैं।"

---

[12] The final episode in Germain Elizabeth's "Cardplayer' tale exemplifies cultural creolization. European tradition contributes Cardplayer's expulsion from Heaven. African tradition puts a familiar frame around it. Hell is forgotten in favor of two-sided conflict between the "little man" and the God. Elizabeth says "Cardplayer" earns the way to Heaven

[13] Gran Dyab

[14] Translated for the word "Deal"

ग्रैन इ्याब बोला "क्या?"

ताश खेलने वाला बोला — "आ न ग्रैन इ्याब, एक बाज़ी खेलते हैं। अगर तुम जीत जाओ तो तुम मुझे खा लेना।"

उसने सोचा "वह मृत्यु दूत खड़ा है। या तो मैं उसके साथ चला जाऊँगा या फिर ग्रैन इ्याब के मुँह में चला जाऊँगा। क्या फर्क पड़ता है। मुझे तो यहाँ भी मरना वहाँ भी मरना।"

वह फिर ग्रैन इ्याब से बोला — "सो अगर तुम जीत गये तो तुम मुझे खा लेना और अगर मैं जीत गया तो तुम मुझे अपने ये **12** छोटे शैतान दे देना।"

ग्रैन इ्याब बोला — "यकीनन। पर ओ ताश खेलने वाले, क्या तुम समझते हो कि तुम मेरे साथ ताश का खेल सकते हो?"

फिर भी दोनों ताश खेलने बैठे तो ताश खेलने वाले ने ग्रैन इ्याब को हरा दिया। अपने समझौते के अनुसार ग्रैन इ्याब गया और अपने **12** छोटे शैतान ला कर उसको दे दिये।

उसने उन शैतानों को उससे ले कर अपने थैले में डाला, थैले को अपने कन्धे पर डाला और मृत्यु दूत से बोला — "देखा तुमने? मैं जीत गया न? मैं कोई ऐसे ही झक नहीं मार रहा था। चलो चलते हैं।"

दोनों चल दिये।

वे लोग स्वर्ग के दरवाजे पर आ पहुँचे थे। दरवाजे पर सेन्ट पीटर खड़ा हुआ था। मृत्यु दूत सेन्ट पीटर से बोला — "मैं इस ताश खेलने वाले को पकड़ लाया हूँ।"

सेन्ट पीटर ने पूछा — "तुम ताश खेलने वाले को ले आये?"

"हॉ यह रहा।"

"बहुत अच्छे, उसको अन्दर ले आओ।" सो ताश खेलने वाला अन्दर गया।

सेन्ट पीटर ने पूछा — "और यह इसके कन्धे पर क्या है?"

मृत्यु दूत बोला — "यह इसकी जीत है जब यह यहॉ आ रहा था तो रास्ते में एक ताश की बाजी खेला और उसमें यह जीत गया।"

सेन्ट पीटर बोले — "क्या इसने कुछ जीत लिया?"

मृत्यु दूत बोला — "हॉ। यह ग्रैन ड्याब के साथ खेला और उससे इसने उसके **12** छोटे शैतान जीत लिये।"

सेन्ट पीटर ने फिर पूछा — "यहॉ कोई शैतान नहीं आ सकता।"

"वह तो ठीक है। पर मैंने इनको जीता है। अब मैं इनका क्या करूँ? ये मेरे हैं। तुम मुझे इनको रखने के लिये कहीं किसी कोने में कोई जगह दे दो।"

सेन्ट पीटर बोले — "मैंने तुमसे कहा न कि यहॉ अन्दर कोई भी शैतान नहीं आ सकता। तुम इनको बाहर छोड़ सकते हो।"

ताश खेलने वाला बोला — "ठीक है। तब मैं इनको यहॉ दरवाजे के पास ही छोड़ देता हूॅ।" और उसने अपना थैला दरवाजे के पास ही रख दिया।

फिर वह बैठ गया और सेन्ट पीटर को घूरने लगा। कुछ पल उसको देखने के बाद वह बोला — "क्या वह तुम्हीं नहीं थे जो कुछ समय पहले मुझसे रात के लिये खाना और ठहरने की जगह मॉगने आये थे? तुम लोग तीन थे। है न?"

सेन्ट पीटर बोले — "हॉ, उनमें एक मैं भी था।"

ताश खेलने वाला बोला — "तुम तीनों भी एक चीज़ थे। तुम तीनों मेरे घर आये। मैं तुम लोगों को अन्दर ले गया। मैंने तुम्हारे लिये चावल बनाये। तुम लोगों को खाने के लिये दिये। तुम लोगों को सोने के लिये जगह दी।

और अब जब मैं यहॉ आया हूॅ तो मैं अन्दर नहीं आ सकता क्योंकि मेरे पास कुछ छोटे शैतान हैं? तुम तो वाकई अजीब चीज़ हो।"

उसने अपने शैतानों का थैला उठाया और वहॉ से चला गया क्योंकि सेन्ट पीटर उसको उन शैतानों के साथ अन्दर नहीं आने दे रहा था।

4 दुनियॉ का जन्म[15]

ईसाई धर्म की यह लोक कथा पश्चिमी अफ्रीका के माली देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

शुरू शुरू में यह सारी दुनियॉ दूध का एक समुद्र थी और भगवान अपनी बनायी चीज़ से सन्तुष्ट था। सो दुनियॉ में केवल दूध का समुद्र था और बादल थे।

पर क्योंकि स्वर्ग और धरती में कोई अन्तर नहीं था सो भगवान ने चाहा कि वह अपनी इस दुनियॉ में कुछ रंगीनी लाये। वह बोला — "दूध से पौधे और पत्थर पैदा हो जायें।" और दूध से पौधे और पत्थर पैदा हो गये।

सो शुरू में भगवान ने दूध बनाया
फिर उसने दुनियॉ को रंगीन बनाने के लिये पौधे और पत्थर बनाये।

पर पत्थर दूध और पौधों के लिये बहुत ही सख्त थे सो उसने उनको दबा कर चौरस कर दिया। भगवान अब पत्थर के मुकाबले कुछ और ज़्यादा मजबूत चीज़ बनाना चाहता था।

सो वह बोला — "पत्थर से लोहा पैदा हो जाये।"

---

[15] The Origin of Creation – a Fulani folktale from Mali, West Africa. Adapted from the Book : "The Orphan Girl and the Other Stories, by Offodile Buchi. 2011
[My Note: This is strange that this folktale is from Fulani people. Fulani people are Muslims and they say in this tale that "God gave us His son." – means that "He gave us Jesus Christ". How could they say this?]

और पत्थर से लोहा पैदा हो गया।

सो शुरू में भगवान ने दूध बनाया
फिर उसने दुनियॉ को रंगीन बनाने के लिये पौधे और पत्थर बनाये।
फिर उसने पत्थर को रोकने के लिये लोहा बनाया

लोहा जैसा कि तुम जानते हो पत्थर के लिये बहुत ही ज़्यादा सख्त हो गया था। अब उसको किसी और ज़्यादा ताकतवर चीज़ की जरूरत थी जो उसको काबू में रख सके सो उसने आग बनायी।

वह बोला — "आग बन जा।" और आग बन गयी।

सो शुरू में भगवान ने दूध बनाया
फिर उसने दुनियॉ को रंगीन बनाने के लिये पौधे और पत्थर बनाये।
फिर उसने पत्थर को रोकने के लिये लोहा बनाया
पर लोहा पत्थर के लिये बहुत ज़्यादा मजबूत था सो उसने आग बनायी

बहुत जल्दी ही आग चारों तरफ फैलने लगी और रुक ही नहीं पायी। जो कुछ भी उसके रास्ते में आता गुस्से में आ कर वह उस सबको जला देती।

सो भगवान ने उसको रोकने के लिये पानी बनाया और कहा — "पानी बन जा।" और पानी प्रगट हो गया जिसने आग के गुस्से को रोका —

सो शुरू में भगवान ने दूध बनाया
फिर उसने दुनियॉ को रंगीन बनाने के लिये पौधे और पत्थर बनाये।
फिर उसने पत्थर को रोकने के लिये लोहा बनाया

पर लोहा पत्थर के लिये बहुत ज़्यादा मजबूत था सो उसने आग बनायी
और फिर आग को रोकने के लिये पानी बनाया

"पानी पानी, तुमने बरसने से क्यों मना कर दिया? क्योंकि मैंने तुमको आग को रोकने के लिये ही बनाया है इसलिये तुम बस लगातार पड़ते ही रहो।"

पर उससे तो बाढ़ आने लगी सो पानी को रोकने के लिये भगवान ने फिर सूरज बनाया।

सो शुरू में भगवान ने दूध बनाया
फिर उसने दुनियॉ को रंगीन बनाने के लिये पौधे और पत्थर बनाये।
फिर उसने पत्थर को रोकने के लिये लोहा बनाया
पर लोहा पत्थर के लिये बहुत ज़्यादा मजबूत था सो उसने आग बनायी

और फिर आग को रोकने के लिये पानी बनाया
और फिर आया सूरज पानी को रोकने के लिये

फिर भगवान ने सोचा — "मैंने बहुत सारी चीज़ें बनायीं अब मुझे आराम की जरूरत है। पर उससे पहले मुझे एक चौकीदार की जरूरत है जो मेरी बनायी हुई इन सब चीज़ों पर निगाह रख सके।"

भगवान ने यह सोचते हुए आदमी बनाया और यह भी सोचा कि उसको मेरी ही शक्ल का होना चाहिये ताकि वे सब उसकी सुन सकें।

सो शुरू में भगवान ने दूध बनाया
फिर उसने दुनियॉ को रंगीन बनाने के लिये पौधे और पत्थर बनाये।

फिर उसने पत्थर को रोकने के लिये लोहा बनाया
पर लोहा पत्थर के लिये बहुत ज़्यादा मजबूत था सो उसने आग बनायी

और फिर आग को रोकने के लिये पानी बनाया
और फिर आया सूरज पानी को रोकने के लिये
और फिर उसने दिया आदमी जो उसकी दुनियॉ पर राज कर सके

पर आदमी को घमंड हो गया और उसने दुनियॉ पर बड़े बेरहम ढंग से राज करना शुरू कर दिया।

सो आदमी को झुकाने के लिये भगवान ने बहुत सारे दुख बनाये। आदमी तब से ही उनसे लड़ने की कोशिश कर रहा है – बीमारियॉ, भूख, चिन्ता, जलन से लड़ते लड़ते वह बहुत कमजोर हो गया है।

पर बाद में ये दुख भी अपने आप में बहुत घमंडी हो गये कि हम तो आदमी को भी अपने कब्जे में रखते हैं।

सो भगवान ने फिर मौत बनायी जिसने उन दुखों को जीता और उसके साथ ही जीता आदमी को भी।

सो शुरू में भगवान ने दूध बनाया
फिर उसने दुनियॉ को रंगीन बनाने के लिये पौधे और पत्थर बनाये।

फिर उसने पत्थर को रोकने के लिये लोहा बनाया
पर लोहा पत्थर के लिये बहुत ज़्यादा मजबूत था सो उसने आग बनायी
और फिर आग को रोकने के लिये पानी बनाया
और फिर आया सूरज पानी को रोकने के लिये

फिर उसने आदमी दिया अपनी बनायी हुई चीज़ों के ऊपर राज करने के लिये
पर आदमी घमंडी हो गया और बेरहमी से राज करने लगा

सो भगवान ने आदमी को नम्र बनाने के लिये दुख बनाये
और आखीर में बनायी मौत दुखों को और आदमी को काबू में रखने के लिये
पर मौत ने तो उन सारे आदमियों को मार डाला जो भी उसके रास्ते में आया
और इस तरह उसने आदमी को भी दुनियॉ से हटा दिया

हालॉकि भगवान यह नहीं चाहता था कि वह आदमी को अपनी दुनियॉ से बिल्कुल ही हटा दे क्योंकि उसको तो उसने अपनी शक्ल का बनाया था सो वह बोला — "मुझे अब कुछ खास बनाना चाहिये। एक ऐसा आदमी जो मौत को जीत सके सो उसने अपना बेटा इस दुनियॉ में भेजा —

सो शुरू में भगवान ने दूध बनाया
फिर उसने दुनियॉ को रंगीन बनाने के लिये पौधे और पत्थर बनाये।

फिर उसने पत्थर को रोकने के लिये लोहा बनाया
पर लोहा पत्थर के लिये बहुत ज़्यादा मजबूत था सो उसने आग बनायी
और फिर आग को रोकने के लिये पानी बनाया
और फिर आया सूरज पानी को रोकने के लिये

फिर उसने आदमी दिया अपनी बनायी हुई चीज़ों के ऊपर राज करने के लिये
पर आदमी घमंडी हो गया और बेरहमी से राज करने लगा
सो भगवान ने आदमी को नम्र बनाने के लिये दुख बनाये

और आखीर में बनायी मौत दुखों को और आदमी को काबू में रखने के लिये
पर मौत ने तो उन सारे आदमियों को मार डाला जो भी उसके रास्ते में आया

और इस तरह उसने आदमी को भी दुनियॉ से हटा दिया
सो भगवान ने इस दुनियॉ में अपना बेटा भेजा जिसने मौत को भी जीत लिया

5 डाक्टर का बेटा और सॉपों का राजा[16]

यह लोक कथा अफ्रीका महाद्वीप के तनज़ानिया देश के ज़ंज़ीबार द्वीप समूह की लोक कथाओं से ली गयी है।

यह कथा सीधे तरीके से ईसाई धर्म से सम्बन्धित नहीं है पर इसमें सोलोमन का जिक्र आता है और सोलोमन भी ईसाई नहीं था पर क्योंकि वह जीसस क्राइस्ट का पुरखा था और इसमें एक आदमी जीसस क्राइस्ट के आने का इन्तजार कर रहा है इसलिये इसको यहॉ शामिल कर लिया गया है।

एक बार एक शहर में एक बहुत बड़ा डाक्टर रहता था। वह अपनी पत्नी और एक छोटे बेटे को छोड़ कर मर गया। जब वह बेटा बड़ा हो गया तो उसकी मॉ ने उसके पिता की इच्छा के अनुसार उसका नाम हसीबू करीमुद्दीन[17] रखा।

जब हसीबू ने स्कूल में पढ़ना लिखना सीख लिया तब उसकी मॉ ने उसको एक दरजी के पास सिलाई का काम सीखने के लिये भेजा पर वह दरजी का काम नहीं सीख सका। फिर उसकी मॉ ने उसको एक चॉदी की चीज़ें बनाने वाले के पास भेजा पर वह वह काम भी नहीं सीख सका।

---

[16] The Physician's Son and the King of the Snakes – folktales of Zanzibar, Tanzania, Africa.
Taken from the Web Site : http://www.worldoftales.com/Tanzanian_folktales.html
[This story seems like an Arabian Nights story in which one story comes out from another story.]

[17] Haseeboo Kareemuddeen – a Muslim male name

इसके बाद वह कई और जगह भी कुछ कुछ काम सीखने के लिये गया पर वह वहाँ भी कुछ नहीं सीख सका। तब उसकी माँ ने कहा कि वह अब कुछ दिन घर बैठे। यह उसको ठीक लगा।

एक दिन हसीबू ने अपनी माँ से पूछा कि उसके पिता क्या काम करते थे तो उसकी माँ ने उसको बताया कि वह एक बहुत ही अच्छे डाक्टर थे।

"तो फिर उनकी किताबें कहाँ हैं?"

माँ बोली — "काफी दिनों से मैंने उनको देखा नहीं है पर वे यहीं कहीं होंगी, शायद पीछे पड़ी होंगी। देख लो।"

उसने उनको इधर उधर ढूँढा। काफी देर तक ढूँढने को बाद आखिर में वे किताबें उसको मिल गयीं पर वे करीब करीब सारी की सारी कीड़ों ने खा ली थीं और वह उनमें से बहुत कम पढ़ सका।

एक दिन उनके चार पड़ोसी उनके घर आये और उसकी माँ से कहा कि अपने बेटे को हमारे साथ जंगल में लकड़ी काटने के लिये भेज दो।

वे लोग वहीं पास में ही काम करते थे। वे जंगल से लकड़ी काटते थे, गधों पर लादते थे और शहर जा कर उसे बेच देते थे। लोग उस लकड़ी से आग जलाते थे।

उसकी माँ ने हाँ कर दी और कहा — "कल मैं उसके लिये एक गधा खरीद दूँगी और फिर वह तुम्हारे साथ तुम्हारे काम धन्धे में लग जायेगा।"

अगले दिन हसीबू की मॉ ने उसके लिये एक गधा खरीद दिया और वह अपने गधे को ले कर उन चारों आदमियों के साथ लकड़ी काटने चला गया।

उस दिन उन लोगों ने बहुत काम किया और बहुत सारा पैसा कमाया। यह सब छह दिनों तक चला पर सातवें दिन बहुत तेज़ बारिश हो गयी और उन सबको बारिश से भीगने से बचने के लिये एक गुफा में जाना पड़ा।

हसीबू गुफा में एक तरफ अकेला बैठा था। उसके पास कुछ करने को तो था नहीं सो वह एक पत्थर उठा कर उसे जमीन पर मारने लगा। उसने वह पत्थर दो चार बार ही मारा था कि उसको वहॉ से कुछ ऐसी आवाज आयी जैसी कि खोखली जमीन पर मारने पर आती है।

उसने अपने साथियों को आवाज लगायी और बोला कि ऐसा लगता है कि यहॉ कोई छेद है। पहले तो किसी ने उसकी आवाज ही नहीं सुनी पर जब उसने दोबारा आवाज लगायी तो वे लोग आये और यह जानने के लिये कि वह खोखली जमीन की आवाज कहॉ से आरही थी उन्होंने वहॉ खोदना शुरू किया।

वे लोग बहुत देर तक नहीं खोद पाये थे कि उनको कुॅए की तरह का एक बहुत बड़ा गड्ढा दिखायी दिया जो शहद से भरा था। उस दिन उन्होंने कोई लकड़ी नहीं काटी बल्कि सारा दिन शहद इकट्ठा करने और उसको बेचने में ही लगा दिया।

सारा शहद जल्दी से जल्दी निकालने के चक्कर में उन्होंने हसीबू को उस शहद के कुँए में नीचे उतार दिया और उससे शहद ऊपर देने के लिये कहा और वे खुद उस शहद को बरतनों में इकट्ठा करके बाजार बेचने के लिये ले जाते रहे।

आखीर में जब वहाँ बहुत कम शहद रह गया तो उन्होंने उस लड़के से उसको भी इकट्ठा करने के लिये कहा और वे खुद एक रस्सी लाने चले गये ताकि वे उस लड़के को बाहर निकाल सकें।

पर बाद में उन्होंने उस लड़के को उसी कुँए में छोड़ दिया और शहद बेचने से जो पैसा उन्होंने कमाया था उसे भी केवल आपस में ही बाँट लिया। उस लड़के को कुछ भी नहीं दिया।

लड़के ने भी जब सारा शहद बटोर लिया तो रस्सी के लिये आवाज लगायी। पर वहाँ कोई होता तो बोलता। वे लोग तो सब वहाँ से चले गये थे।

तीन दिन तक वह लड़का उसी कुँए में पड़ा रहा। अब उसको यकीन हो गया था कि उसके साथी लोग उसको छोड़ कर चले गये थे।

उधर उसके चारों साथी उसकी माँ के पास गये और उससे कहा कि उसका बेटा जंगल में उनसे बिछड़ गया। उसके बाद उन्होंने शेर की दहाड़ की आवाज भी सुनी। काफी ढूँढने पर भी लड़के और उसके गधे का कहीं पता नहीं चला। इससे ऐसा लगता ही कि हसीबू और उसके गधे दोनों को शेर ने खा लिया।

जाहिर है कि हसीबू की मॉ अपने बेटे के लिये बहुत रोयी बहुत चिल्लायी पर क्या कर सकती थी। बेचारी रो पीट कर बैठ गयी। उसके पड़ोसियों ने उसके हिस्से का पैसा भी रख लिया था।

उधर हसीबू उस कुॅए में इधर उधर चक्कर काटता रहा और सोचता रहा कि आखिर उसका होगा क्या? तब तक वह शहद खाता रहा, थोड़ा सोता रहा और बाकी समय में सोचता रहा।

चौथे दिन जब वह बैठा बैठा सोच रहा था तो उसने एक बहुत बड़ा बिच्छू उपर से गिरता हुआ देखा। उसने उस बिच्छू को मार तो दिया पर वह यह सोचने लगा कि यह बिच्छू आया कहॉ से? इसका मतलब है कि इस कुॅए में किसी और जगह भी कोई छेद है जहॉ से यह आया है। मैं ढूॅढता हूॅ उस जगह को।

सो उसने चारों तरफ देखना शुरू किया तो उसने देखा कि एक पतली झिरी में से रोशनी आ रही है। उसने तुरन्त अपन चाकू निकाला और उस झिरी को बड़ा करने में लगा रहा जब तक कि वह छेद इतना बड़ा नहीं हो गया जिसमें से वह निकल सकता।

उस छेद में से फिर वह बाहर निकल आया। अब वह एक ऐसी जगह आ गया था जो उसने पहले कभी नहीं देखी थी। उसे एक सड़क दिखायी दी तो वह उसी सड़क पर चल दिया और एक बड़े मकान के सामने पहुॅच गया।

उस मकान का दरवाजा खुला था सो वह उस मकान के अन्दर घुस गया। वहॉ उसने सोने के दरवाजे देखे जिनमें सोने के ताले लगे थे और मोती की चाभियॉ लगीं थीं। वहॉ उसने सुन्दर कुरसियॉ भी देखीं जिनमें बेशकीमती पत्थर जड़े हुए थे।

बाहर वाली बैठक में उसने एक बहुत सुन्दर काउच देखा जिसके ऊपर एक बहुत कीमती चादर पड़ी थी। वह उस काउच पर लेट गया।

पर तभी उसको लगा कि किसी ने उसको उठा कर कुरसी पर बिठा दिया और सुना कि कोई कह रहा था — "देखो इसको चोट न लगे, इसको सॅभाल कर जगाओ।"

तभी उसकी ऑख खुल गयी और उसने देखा कि उसके चारों तरफ तो बहुत सारे सॉप थे और उनमें से एक सॉप ने तो शाही कपड़े भी पहन रखे थे।

वह लड़का बोला — "तुम लोग कौन हो?"

वह सॉप बोला — "मैं सुलतानी वानीओका[18] हूॅ, सॉपों का राजा, और यह मेरा घर है। तुम कौन हो?"

लड़का बोला — "मैं हसीबू करीमुद्दीन हूॅ।"

"तुम कहॉ से आये हो?"

"मुझे नहीं मालूम मैं कहॉ से आया हूॅ और कहॉ जा रहा हूॅ।"

[18] Sultaanee Waaneeokaa – the King of the Snakes

सॉपों का राजा बोला — "खैर, अभी तुम इसकी चिन्ता मत करो। पहले तुम कुछ खा लो। मुझे लग रहा है कि तुम बहुत भूखे हो और मुझे भी बहुत भूख लगी है।"

राजा ने हुकुम दिया तो कई सॉप बहुत सारे बहुत बढ़िया फल ले आये। वे उन्हें खाते रहे और बात करते रहे। जब खाना खत्म होगया तो राजा ने हसीबू की कहानी सुननी चाही। हसीबू ने अपनी सारी कहानी सुना दी और फिर राजा से उसकी कहानी सुननी चाही।

सॉपों के राजा की कहानी

सॉपों के राजा ने कहा — "मेरी कहानी थोड़ी लम्बी है फिर भी मैं तुमको उसे सुनाऊॅगा। काफी दिन पहले मैं हवा पानी की बदली के लिये यह जगह छोड़ कर अल काफ पहाड़[19] पर चला गया। एक दिन मैंने एक अजनबी को आते देखा तो उससे पूछा कि तुम कहॉ से आ रहे हो?"

तो उसने जवाब दिया — "मैं तो ऐसे ही जंगलों में भटकता घूम रहा हूॅ।"

मैंने उससे पूछा — "तुम किसके बेटे हो?"

[19] Al Kaaf Mountain

वह बोला — "मेरा नाम बोलूकिया[20] है। मेरे पिता एक सुलतान थे। जब वह मर गये तो मैंने उनकी एक छोटी सी सन्दूकची खोली। उस सन्दूकची में एक थैला था और उस थैले में एक पीतल का बक्सा था।

जब मैंने वह पीतल का बक्सा खोला तो उसमें ऊनी कपड़े में लिपटी हुई कुछ लिखी हुई चीज़ रखी थी। वह किसी धर्मदूत[21] की तारीफ में लिखी हुई थी।

उनमें वह एक बहुत ही अच्छा आदमी दिखाया गया था सो मुझे उस आदमी को देखने की इच्छा हुई। पर जब मैंने उसके बारे में पूछताछ की तो पता चला कि वह धर्मदूत तो अभी पैदा ही नहीं हुआ था।

तभी मैंने सोच लिया कि मैं तब तक घूमता रहूँगा जब तक मैं उससे मिल नहीं लूँगा। सो मैंने अपना देश छोड़ा, अपना घर छोड़ा और तब से मैं घूमता ही फिर रहा हूँ।"

मैंने पूछा — "अगर वह अभी तक पैदा ही नहीं हुआ है तो तुम उसे कहाँ देखने की उम्मीद रखते हो? हाँ अगर तुम्हारे पास "साँप का पानी" हो तो तुम शायद तब तक ज़िन्दा भी रह सको जब तक वह पैदा हो और तुम उसको देख सको। पर उस पानी की बात करने से भी क्या फायदा क्योंकि वह तो बहुत दूर है।"

[20] Bolukiya

[21] Translated for the word "Prophet"

उसने कहा — "मुझे तो घूमते ही रहना है।" और मुझसे विदा ले कर वह चला गया।

घूमते घूमते वह मिश्र[22] पहुँच गया जहाँ किसी ने उससे पूछा — "तुम कौन हो?"

उसने जवाब दिया — "मैं बोलूकिया हूँ तुम कौन हो?"

उस आदमी ने कहा — "मैं अल फान[23] हूँ तुम कहाँ जा रहे हो?"

"मैंने अपना देश छोड़ा अपना मकान छोड़ा और मैं धर्मदूत को ढूँढ रहा हूँ।"

अल फान बोला — "मैं तुमको एक ऐसे आदमी को ढूँढने की बजाय जो अभी तक पैदा भी नहीं हुआ और अच्छा काम बता सकता हूँ। चलो पहले हम साँपों के राजा के पास चलते हैं और उससे कोई जादुई दवा लेते हैं।

फिर हम राजा सोलोमन के पास चलते हैं और उससे उसकी अँगूठी लेते हैं। उस अँगूठी से हम जिनी[24] को अपना नौकर बना लेंगे और फिर उससे जो चाहे वह काम ले लेंगे।"

बोलूकिया बोला — "मैं साँपों के राजा से अल काफ पहाड़ पर मिल चुका हूँ।"

अल फान बोला — "तो चलें।"

---

[22] Egypt

[23] Al Faan – name of a Muslim man

[24] King Solomon to control his Genie or Jinn

अब अल फान तो सोलोमन की अँगूठी लेना चाहता था ताकि वह एक बहुत बड़ा जादूगर बन जाये और जिनी और चिड़ियों आदि को अपने बस में कर सके जबकि बोलूकिया तो केवल धर्मदूत से ही मिलना चाहता था।

सो दोनों सॉपों के राजा के पास चल दिये। जब वे जा रहे थे तो अल फान बोला — "एक पिंजरा बना लेते हैं उसमें हम सॉपों के राजा को कैद कर लेंगे और उसको साथ में ले चलेंगे।"

"ठीक है।"

सो दोनों ने एक पिंजरा बनाया, उसमें एक प्याला दूध रखा और एक प्याला शराब रखी और उसको अल काफ पहाड़ पर ले आये।

मैंने बेवकूफ की तरह वह सारी शराब पी ली और नशे में धुत हो गया। उसी हालत में उन्होंने मुझे पिंजरे में बन्द किया और अपने साथ ले गये।

जब मुझे होश आया तो मैंने अपने आपको एक पिंजरे में बन्द पाया और मैंने देखा कि बोलूकिया उस पिंजरे को ले जा रहा था। मैं बोला — "तुम आदमी के बच्चे बहुत खराब हो। तुम क्या चाहते हो मुझसे?"

वे बोले — "हमें कोई ऐसी दवा चाहिये जिसको हम अपने पैरों पर लगा कर जहॉ भी हमें अपने सफर में पानी पर चलने की जरूरत हो हम उस पर चल सकें।"

"ठीक है, चलो।"

चलते चलते हम एक ऐसी जगह आ गये जहॉ बहुत सारे और बहुत तरीके के पेड़ थे। जब उन पेड़ों ने मुझको देखा तो कहने लगे "मैं इस चीज़ की दवा हूॅ, मैं उस चीज़ की दवा हूॅ। मैं हाथों की दवा हूॅ, मैं पैरों की दवा हूॅ।"

उसी समय एक पेड़ ने कहा — "अगर मुझे कोई पैरों पर लगा ले तो वह पानी पर चल सकता है।"

जब मैंने उन दोनों को यह बताया तो वे बोले यही तो हम चाहते थे सो उन्होंने उस पेड़ से बहुत सारी वह दवा ले ली। इसके बाद वे मुझे पहाड़ वापस ले गये, आजाद कर दिया और चले गये।

मुझे छोड़ कर वे अपने रास्ते चले गये और समुद्र के किनारे तक पहुॅच गये। वहॉ उन्होंने वह दवा अपने पैरों पर लगायी और पानी पर काफी दिनों तक चलते रहे जब तक वे सोलोमन की जगह के पास तक नहीं पहुॅच गये। वहॉ उन्होंने एक जगह इन्तजार किया जहॉ अल फान ने फिर से दवाऐं बनायीं।

फिर वे सोलोमन के पास पहुॅचे। उस समय वह सो रहा था और उसका जिनी उसका पहरा दे रहा था। उसका वह हाथ उसकी छाती पर रखा था जिसमें वह वह अॅगूठी पहनता था।

जैसे ही बोलूकिया सोलोमन की अॅगूठी लेने के लिये उसकी तरफ बढ़ा तो एक जिनी ने पूछा — "तुम कहॉ जा रहे हो?"

बोलूकिया बोला — "मैं अल फान के साथ हूँ और अल फान सोलोमन की अँगूठी लेने आया है।"

जिनी बोला — "जाओ यहाँ से। वह आदमी तो मरने वाला है।"

जब अल फान की तैयारियाँ पूरी हो गयीं उसने बोलूकिया से कहा — "तुम यहीं मेरा इन्तजार करो मैं अभी आता हूँ।" और वह अँगूठी लेने चला गया।

जैसे ही वह अँगूठी लेने के लिये बढ़ा तो उसे एक बहुत ज़ोर से चिल्लाहट सुनायी दी और किसी अनदेखी ताकत ने उसको उठा कर बहुत दूर फेंक दिया।

किसी तरह वह उठा और अभी भी अपनी दवा में विश्वास रखते हुए वह फिर अँगूठी लेने के लिये बढ़ा। तभी साँस का एक ज़ोर का झोंका उसके चेहरे पर लगा और वह जल कर राख हो गया।

जब बोलूकिया यह सब देख रहा था एक आवाज बोली — "जाओ यहाँ से। देखो यह आदमी मर चुका है।"

वह आवाज सुन कर बोलूकिया वहाँ से लौट पड़ा और समुद्र तक आया। वहाँ आ कर उसने फिर से अपने पैरों पर पानी पर चलने वाली दवा लगायी और समुद्र पार कर समुद्र के दूसरी तरफ आ गया। उसके बाद भी वह कई सालों तक इधर उधर घूमता रहा।

एक सुबह उसने एक आदमी देखा जिससे उसने कहा — "सलाम।"

उस आदमी ने भी उसको सलाम किया।

बोलूकिया ने उससे पूछा — "तुम कौन हो?"

वह आदमी बोला — "मेरा नाम जान शाह[25] है। तुम कौन हो?"

बोलूकिया ने उससे उसकी कहानी सुनाने की प्रार्थना की। वह आदमी जो कभी हॅस रहा था कभी रो रहा था उसने बोलूकिया से पहले उसकी कहानी सुनाने के लिये कहा।

बोलूकिया की कहानी सुनने के बाद जान शाह बोला — "बैठो, मैं तुमको शुरू से अपनी कहानी सुनाता हूॅ। मेरा नाम जान शाह है। मेरे पिता ताईगेमस[26] सुलतान थे। वह रोज जंगल में शिकार खेलने जाया करते थे।

एक दिन मैंने उनसे कहा कि मैं भी आपके साथ शिकार पर जाना चाहता हूॅ। वह बोले — "नहीं बेटा, तुम अभी घर में ही रहो, तुम अभी यहीं ठीक हो।"

इस पर मैंने बहुत ज़ोर से रोना शुरू कर दिया। मैं क्योंकि अपने माता पिता का अकेला बच्चा था और मेरे पिता मुझे बहुत

[25] Jan Shah – a Muslim name of a man

[26] Taaeeghamus

प्यार करते थे, वह मेरा रोना नहीं देख सके सो वह बोले — "अच्छा अच्छा चलो, रोओ नहीं।"

इस तरह हम सब जंगल गये। हमारे साथ बहुत सारे नौकर चाकर थे। जब हम जंगल पहुँच गये तो वहाँ जा कर हम लोगों ने खाना खाया और शराब पी और फिर सब शिकार के लिये निकल गये। मैं अपने सात नौकरों के साथ शिकार पर गया।

हमें एक सुन्दर हिरन दिखायी दिया। हम उसके पीछे समुद्र तक भागते चले गये। भागते भागते वह हिरन पानी में चला गया तो मैंने और मेरे चार नौकरों ने भी एक नाव ली और उस हिरन का पीछा किया। बाकी बचे मेरे तीन नौकर मेरे पिता के पास लौट गये।

हम उस हिरन का पीछा करते करते समुद्र में काफी दूर तक निकल गये पर किसी तरह हमने उसे पकड़ लिया और मार दिया। उसी समय बहुत तेज़ हवा चलने लगी और हम समुद्र में रास्ता भटक गये।

जब वे तीन नौकर मेरे पिता के पास पहुँचे तो मेरे पिता ने उनसे पूछा — "तुम्हारा मालिक कहाँ है?"

उन्होंने मेरे पिता को हिरन, उसके समुद्र में भाग जाने, और हमारा नाव में उसका पीछा करने के बारे में बताया तो वह रोकर

बोले — "मेरा बेटा तो गया, मेरा बेटा तो गया।" और घर लौट कर मुझे मरा हुआ समझ कर वह बहुत रोये।

कुछ समय समुद्र में इधर उधर घूमने के बाद हम एक टापू पर आये जहॉ बहुत सारी चिड़ियॉ थीं। वहॉ हमें फल और पानी मिल गया था सो हमने फल खाये और पानी पिया। रात हमने एक पेड़ के ऊपर सो कर गुजारी।

सुबह को हम फिर से अपने सफर पर चल दिये और एक दूसरे टापू पर आये। पिछले टापू की तरह से हमको यहॉ भी फल और पानी मिल गया सो हमने फल खाये और पानी पिया और रात पेड़ के ऊपर गुजारी। रात में कुछ जंगली जानवरों की आवाजें आती रहीं।

सुबह जितनी जल्दी हो सकता था हमने वह टापू भी छोड़ दिया और अपने सफर पर निकल पड़े। चलते चलते हम एक तीसरे टापू पर आये। वहॉ भी हमने खाना ढूँढने की कोशिश की तो हमें एक पेड़ दिखायी दिया जो लाल धारी वाले सेबों से लदा हुआ था।

जैसे ही हमने एक सेब तोड़ने की कोशिश की हमें किसी की आवाज सुनायी दी — "इस पेड़ को नहीं छूना। यह पेड़ राजा का है।" हम रुक गये।

रात के समय वहॉ बहुत सारे बन्दर आये जो हमें ऐसा लगा कि हमको देख कर बहुत खुश थे। वे हमारे लिये बहुत सारे फल लाये जिनको हम खा सकते थे।

तभी मैंने उनमें से एक बन्दर को यह कहते हुए सुना — "हम इस आदमी को अपना सुलतान बना लेते हैं।"

दूसरा बोला — "हमें इसको अपना सुलतान बनाने से क्या फायदा? ये सब तो सुबह होने पर भाग जायेंगे।"

तीसरा बोला — "पर अगर हम उनकी नाव तोड़ दें तब वे नहीं भाग सकते न।"

और वही हुआ। जब हम सुबह अपनी नाव में जाने के लिये तैयार हुए तो हमने देखा कि हमारी नाव तो टूटी पड़ी है। अब हमारे पास वहॉ रुकने और उन बन्दरों के साथ खेलने के अलावा और कोई चारा नहीं था। बन्दर हम लोगों से काफी खुश दिखायी देते थे।

एक दिन मैं उस टापू पर टहल रहा था कि मुझे एक पत्थर का बहुत बड़ा मकान दिखायी दिया। उसके दरवाजे पर लिखा हुआ था — "जब भी कोई आदमी इस टापू पर आता है तो उसके लिये इस टापू को छोड़ना मुश्किल है क्योंकि यहॉ के बन्दर किसी आदमी को अपना राजा बनाना चाहते हैं।

अगर वह यहॉ से भागने का रास्ता ढूँढने की कोशिश करता है तो उसको लगता है कि ऐसा कोई रास्ता है ही नहीं, पर एक रास्ता है और वह रास्ता यहॉ से उत्तर की तरफ है।

अगर तुम उस तरफ जाओगे तो तुमको एक मैदान मिलेगा जहॉ बहुत सारे शेर और सॉप रहते हैं। तुमको उन सबसे लड़ना होगा और जब तुम उनको जीत लोगे तभी तुम आगे जा सकते हो।

आगे जा कर तुम्हें एक और मैदान मिलेगा जहॉ कुत्तों जितनी बड़ी चींटियॉ रहतीं हैं। उनके दॉत भी कुत्तों के दॉत जैसे हैं और वे बड़ी भयानक हैं। तुमको उनसे भी लड़ना होगा और अगर तुमने उनको जीत लिया तो बस फिर आगे का रास्ता साफ है।"

मैंने यह खबर अपने नौकरों को बतायी तो हम लोग इस नतीजे पर पहुँचे कि मरना तो हमें दोनों तरीके से है तो क्यों न हम अपनी आजादी को पाने के लिये लड़ते हुए मरें।

हम सबके पास हथियार थे सो हम लोग उत्तर की तरफ चल दिये। जब हम पहले मैदान में पहुँचे तो शेर चीतों और सॉपों से लड़ाई में हमारे दो नौकर मारे गये। फिर हम दूसरे मैदान में पहुँचे। वहॉ भी हमारे दो नौकर मारे गये सो मैं अकेला ही वहॉ से बच कर निकल पाया।

उसके बाद मैं बहुत दिनों तक घूमता रहा। जो कुछ मिल जाता था वही खा लेता था। आखिर मैं एक शहर में आ पहुँचा जहॉ मैं

कुछ दिन रहा। वहॉ मैंने नौकरी ढूँढने की भी कोशिश की पर कोई नौकरी मुझे मिली ही नहीं।

एक दिन एक आदमी मेरे पास आया और बोला — "क्या तुम काम की तलाश में हो?"

"हॉ हूँ तो।"

"तो मेरे साथ आओ।" और मैं उसके साथ उसके घर चला गया।

वहॉ पहुँचने पर उसने मुझे एक ऊँट की खाल दिखायी और बोला — "मैं तुमको इस खाल में बन्द कर दूँगा और एक बहुत बड़ा चिड़ा तुमको दूर के एक पहाड़ पर ले जायेगा। जब वह तुमको वहॉ ले जायेगा तो वहॉ वह तुम्हारी इस खाल को फाड़ देगा।

उस समय तुम उसको भगा देना और कुछ जवाहरात जो तुमको वहॉ मिलेंगे उनको नीचे फेंक देना। जब वे सब जवाहरात नीचे आ जायेंगे तो मैं तुमको नीचे ले आऊँगा।"

सो उसने मुझे उस ऊँट की खाल में बन्द कर दिया और एक चिड़ा मुझे एक पहाड़ की चोटी पर ले गया। वहॉ वह मुझे खाने ही वाला था कि मैं उस खाल में से कूद पड़ा और मैंने उसको डरा कर भगा दिया। उसके बाद मैंने बहुत सारे जवाहरात नीचे की तरफ फेंक दिये।

जवाहरात फेंकने के बाद मैंने उस आदमी को कई बार पुकारा पर उसने काई जवाब नहीं दिया। वह आदमी वे जवाहरात ले कर चला गया था और मैं उस पहाड़ पर ही रह गया।

मैंने तो अपने आपको मरा हुआ ही समझ लिया था। मैं वहॉ उस बड़े जंगल में बहुत दिनों तक घूमता रहा कि मुझे एक अकेला घर मिला।

उस घर में एक बूढ़ा रहता था उसने मुझे खाना और पानी दिया जिससे मेरी जान में जान आयी। मैं वहॉ काफी समय तक रहा। वह बूढ़ा मुझे अपने बेटे की तरह से प्यार करता था।

एक दिन वह बूढ़ा कहीं बाहर गया तो उसने मुझे अपनी सारी चाभियॉ देते हुए कहा कि मैं उसके घर का कोई भी कमरा खोल सकता हूँ सिवाय एक कमरे के।

और जैसा कि अक्सर होता है कि अगर किसी आदमी को किसी काम करने से मना करो तो वह आदमी सबसे पहले वही काम करता है सो जैसे ही वह बूढ़ा चला गया मैंने उसका वही कमरा सबसे पहले खोला जिसको उसने मुझसे खोलने के लिये मना किया था।

मैंने वह कमरा खोला तो वहॉ मुझे एक बड़ा सा बगीचा दिखायी दिया जिसमें एक छोटी सी नदी बह रही थी। उसी समय वहॉ तीन चिड़ियॉ उड़ कर आयीं और उस नदी के किनारे बैठ गयीं।

बैठते ही वे तीनों चिड़ियॉ तीन बहुत सुन्दर लड़कियों में बदल गयीं। तीनों ने अपने कपड़े उतार कर किनारे पर रखे, नदी में नहायीं, फिर कपड़े पहने और फिर से चिड़ियों में बदल कर फुर्र से उड़ गयीं। मैं यह सब देखता रहा।

मैंने दरवाजे को ताला लगा दिया और चला गया। पर मेरी भूख गायब हो गयी थी। मैं इधर उधर बिना किसी काम के घूमता रहता। जब वह बूढ़ा घर वापस लौटा तो उसने मेरा यह अजीब हाल देखा तो मुझसे पूछा — "क्या बात है तुम ऐसे क्यों घूम रहे हो?"

मैंने उसे बता दिया कि मैंने वे तीन लड़कियॉ देखीं थीं जिनमें से एक मुझे बहुत अच्छी लगी। अगर मैं उससे शादी नहीं कर पाया तो मैं मर जाऊॅगा।

उस बूढ़े आदमी ने बताया कि यह तो मुमकिन ही नहीं था क्योंकि वे तीनों लड़कियॉ जिनी के राजा की लड़कियॉ थीं और जहॉ हम थे वे वहॉ से तीन साल की दूरी पर रहतीं थीं।

मैंने उससे कहा कि मेरा मन इस बात को नहीं मानता और किसी तरह वह मेरी शादी उस लड़की से करा दे नहीं तो मैं मर जाऊॅगा। आखिर उसने मुझे एक सलाह दी।

वह बोला जब तक वे दोबारा आतीं हैं तब तक तुम उनका इन्तजार करो और जब वे आयें तो जिसको तुम सबसे ज़्यादा चाहते हो छिप कर उसके कपड़े चुरा लेना।

सो मैंने उनका इन्तजार किया। जब वे आयीं तो मैंने उस लड़की के कपड़े चुरा लिये जिससे मुझको शादी करनी थी। जब वह नहा कर पानी में से बाहर निकली तो उसे उसके कपड़े नहीं मिले।

वह इधर उधर देखने लगी तो मैंने आगे बढ़ कर उससे कहा — "तुम्हारे कपड़े मेरे पास हैं।"

उसने मुझसे अपने कपड़े माँगे — "मेरे कपड़े दे दीजिये मैं जाना चाहती हूँ।"

मैंने उससे कहा कि मैं तुमको बहुत प्यार करता हूँ और तुमसे शादी करना चाहता हूँ। वह बोली मैं अपने पिता के पास जाना चाहती हूँ। मैंने कहा तुम अब अपने पिता के पास नहीं जा सकतीं।

उसकी बहिनें तो अपने अपने कपड़े पहन कर उड़ गयीं पर वह नहीं जा सकी क्योंकि उसके कपड़े मेरे पास थे। मैं उसको घर के अन्दर ले आया। उस बूढ़े ने हमारी शादी करवा दी और मुझसे उसके कपड़े जो मैंने चुरा लिये थे उनको उसे देने के लिये मना कर दिया।

बल्कि उसने मुझसे कहा कि मैं उनको छिपा कर रख दूँ क्योंकि अगर उसको वे कपड़े मिल गये तो वह फिर उड़ कर अपने पिता के घर चली जायेगी और फिर मुझे वापस नहीं मिलेगी। सो मैंने उसके कपड़ों को एक गड्ढा खोद कर उस गड्ढे में दबा दिया।

लेकिन एक दिन जब मैं घर में नहीं था तो उसने वे कपड़े गड्ढे में से निकाल लिये और पहन लिये और एक नौकरानी से जो मैंने

उसकी सेवा के लिये दे रखी थी बोली — "जब तुम्हारे मालिक लौट कर आयें तो उनको बोलना कि मैं घर चली गयी हूँ। अगर वह मुझसे सच्चा प्यार करते होंगे तो मेरे पीछे पीछे चले आयेंगे।"

और वह उड़ गयी।

जब मैं घर आया तो उन लोगों ने मुझे यह सब बताया। मैं कई सालों तक उसकी तलाश करता रहा। आखिर मैं एक शहर में आया जहाँ मुझसे एक आदमी ने पूछा — "तुम कौन हो?"

मैंने कहा — "जान शाह।"

"और तुम्हारे पिता का नाम?"

"ताईगैमस।"

वह फिर बोला — "क्या तुम ही वह आदमी हो जिसने हमारी मालकिन से शादी की थी?"

मैंने पूछा — "कौन है तुम्हारी मालकिन?"

"सैदाती शम्स[27]।"

मैं खुशी से चिल्ला पड़ा — "हाँ मैं ही तो हूँ वह।"

वह मुझे अपनी मालकिन के पास ले गया। यह वही लड़की थी जिससे मैंने शादी की थी। वह मुझे अपने पिता के पास ले गयी और उसको बताया कि मैं ही उसका पति था। सब लोग बहुत खुश हुए।

[27] Sayadaatee Shams – name of the dajughter of the King of Jini

फिर हमने सोचा कि हम एक बार अपना पुराना घर देख कर आयें तो उसके पिता का जिनी हमको तीन दिन में वहॉ ले गया। हम वहॉ एक साल रहे और फिर लौट आये। लेकिन कुछ ही समय बाद मेरी पत्नी मर गयी।

उसके मरने के बाद मैं बहुत दुखी हो गया। उसके पिता ने मुझे बहुत समझाने की कोशिश की। अपनी दूसरी बेटी की शादी भी मुझ से करनी चाही पर मुझे उसके बिना कुछ अच्छा नहीं लगता था और आज तक मैं उसी के दुख में दुखी हूॅ। यही है मेरी कहानी।"

अपनी कहानी सुनाने के बाद बोलूकिया अपने रास्ते चला गया और इधर उधर घूमता रहा फिर मर गया।"

कहानी सुनने के बाद हसीबू ने सॉपों के राजा से उसको घर भेजने की प्रार्थना की। पर सॉपों के राजा सुलतानी वानीओका ने हसीबू से कहा — "जब तुम घर चले जाओगे तब तुम जरूर ही मुझे नुकसान पहुॅचाओगे।"

हसीबू को उसका यह विचार बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगा पर वह बोला — "मैं किसी भी तरह आपको किसी भी तरह का नुकसान पहुॅचाने की सोच भी नहीं सकता। मैं आपसे प्रार्थना करता हूॅ कि आप मुझे मेरे घर भेज दीजिये।"

सॉपों का राजा बोला — "मैं तुमको घर भेज तो दूॅगा पर मुझे यकीन है कि तुम वापस जरूर आओगे और मुझे मार डालोगे।"

हसीबू फिर बोला — "मैं इतना बेवफा कभी नहीं हो सकता कि मैं आपको मारने के लिये यहाँ वापस आऊँ। मैं कसम खाता हूँ कि मैं आपको कभी कोई नुकसान नहीं पहुँचाऊँगा।"

साँपों के राजा ने कहा — "ठीक है, मैं तुम्हारी बात माने लेता हूँ पर मेरी एक बात का ख्याल रखना कि जहाँ बहुत सारे लोग वहाँ कभी नहीं नहाना।"

हसीबू बोला — "ठीक है मैं वहाँ नहीं नहाऊँगा।" और राजा ने उसको उसके घर भेज दिया।

हसीबू अपनी माँ के पास गया। उसकी माँ तो उसको देख कर बहुत ही खुश हो गयी कि उसका बेटा ज़िन्दा है।

अब हुआ क्या कि जहाँ हसीबू रहता था वहाँ का सुलतान बहुत बीमार पड़ा। वहाँ के डाक्टरों ने कहा कि केवल साँपों के राजा को मार कर उसको उबाल कर उसके सूप को राजा को पिलाने से ही वह ठीक हो सकता था।

राजा का वजीर जादू के बारे में कुछ जानता था सो उसने बाहर सड़कों पर जो नहाने के घर बने हुए थे वहाँ बहुत सारे आदमी खड़े कर दिये और उनको कह दिया कि अगर कोई ऐसा आदमी यहाँ नहाने आये जिसके पेट पर कोई निशान हो तो उसको पकड़ कर मेरे पास ले आना।

इधर हसीबू को साँपों के राजा के पास से लौटे तीन दिन हो गये थे। वह राजा की इस बात को बिल्कुल ही भूल गया था कि

उसको जहॉ बहुत सारे आदमी हों वहॉ नहीं नहाना था सो वह भी दूसरे लोगों के साथ उस जगह नहाने चला गया जहॉ और बहुत सारे लोग नहा रहे थे।

तभी अचानक उसको कुछ सिपाहियों ने पकड़ लिया और उसको वजीर के पास ले आये।

वजीर ने कहा — "तुम मुझे सॉपों के राजा के पास ले चलो।"

हसीबू बोला — "मैं नहीं जानता वह कहॉ है।"

वजीर ने कहा — "बॉध दो इसको।"

फिर उन्होंने उसको इतना पीटा गया कि उसकी पीठ इतनी घायल हो गयी कि वह बेचारा ठीक से खड़ा भी नहीं हो पा रहा था।

वह चिल्लाया — "रुक जाओ, मैं तुमको वह जगह दिखाता हूॅ।"

इस प्रकार हसीबू वजीर को सॉपों के राजा के घर ले गया। सॉपों का राजा उसको देखते ही बोला — "मैंने तुमसे कहा था न कि तुम मुझे मारने के लिये वापस आओगे।"

हसीबू चिल्लाया —"मैं क्या करता। ज़रा मेरी पीठ तो देखिये। पीट पीट कर क्या हाल कर दिया है उन्होंने मेरी पीठ का।"

"किसने मारा तुमको इतनी बेदर्दी से?"

"इस वजीर ने।"

सॉपों का राजा एक लम्बी सॉस ले कर बोला अब मेरे लिये कोई उम्मीद नहीं रह गयी है पर तुम खुद मुझे वहॉ ले कर जाओगे।

जब वे लोग शहर जा रहे थे तो सॉपों के राजा ने हसीबू से कहा — "जब हम शहर पहुँच जायेंगे तो वहॉ जा कर मुझे मार दिया जायेगा और मुझे पकाया जायेगा। उसका पहला रस यह वजीर तुमको पिलायेगा पर तुम उस रस को पीना नहीं बल्कि एक बोतल में रख लेना।

फिर वह तुमको दूसरा रस देगा। उसका दूसरा रस तुम पी लेना। उस रस को पी कर तुम बहुत बड़े डाक्टर बन जाओगे। उसका तीसरा रस वह दवा होगी जो सुलतान को ठीक करेगी।

जब वजीर तुमसे यह पूछे कि क्या तुमने वह पहले वाला रस पी लिया तो तुम उसको बोलना कि हॉ मैंने वह रस पी लिया। यह कह कर वह पहले रस वाली बोतल निकाल कर उस रस को वजीर को देना और कहना कि यह दूसरा रस तुम्हारे लिये है।

जैसे ही वह पहला वाला रस पियेगा वह मर जायेगा। इस तरह से हम दोनों का बदला पूरा हो जायेगा।

हसीबू ने वैसा ही किया जैसा कि सॉपों के राजा ने उसे करने के लिये कहा था।

सॉपों के राजा को पकाने के बाद उस वजीर ने उसका पहला रस पीने के लिये हसीबू को दिया पर सॉपों के राजा की बात याद करके उसने वह रस एक बोतल में रख लिया।

जब उसको दूसरा रस दिया गया तो वह उसने पी लिया जिसने उसको एक बहुत बड़ा डाक्टर बना दिया। तीसरा रस उसने रख लिया क्योंकि वह तो राजा को ठीक करने वाला रस था।

जव वजीर ने उससे पूछा कि क्या उसने वह पहला वाला रस पी लिया तो उसने झूठ बोल दिया कि हॉ मैंने वह रस पी लिया और उसने पहली वाली बोतल निकाल कर उसको दे दी और उससे कहा कि "लो यह दूसरी बोतल तुम्हारे लिये है।"

वजीर ने दूसरी बोतल का रस पी लिया और मर गया। तीसरी बोतल के रस को उसने सुलतान को पिला दिया जिससे सुलतान ठीक हो गया।

यह देख कर और सारे डाक्टर हसीबू की एक अच्छे डाक्टर की हैसियत से बहुत इज़्ज़त करने लगे।

Names of Jesus' 12 Apostles –

1. Simon Peter (brother of Andrew) - He was active in bringing people to Jesus – Bible writer
2. James (son of Zebedee and other brother of John) also called James the Greater
3. John (son of Zebedee and brother of James) – Bible writer
4. Andrew (brother of Simon Peter) – He was active in bringing people to Jesus
5. Philip od Bethsaida
6. Thomas (Didymus)
7. Bartholomew (Nathaniel) – He was one of the disciples to whom Jesus appeared at the Sea of Tiberias after his Resurrection. He was witness of the Ascension
8. Matthew (Levi) of the Capernaum
9. James (son of Alphaeus), also called "James the Lesser" Bible writer
10. Simon the Zealot (the Canaanite)
11. Thaddaeus-Judas (Lebbaeus) – brother of James the Lesser and brother of Matthew (Levi) of the Capernaum
12. Judas Iscariot who also betrayed him

The New Testament says the end of only two Apostles – Judas who betrayed Jesus and then killed himself; and James the son of Zebedee who was executed by Herod.

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

36 पुस्तकें www.Scribd.com/Sushma_gupta_1 पर उपलब्ध हैं।

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें ई–मीडियम पर सोसायटी औफ फौकलोर, लन्दन, यू के, के पुस्तकालय में उपलब्ध हैं।
Write to :- E-Mail : thefolkloresociety@gmail.com

1 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं — 10 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — 45 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — प्रभात प्रकाशन
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — प्रभात प्रकाशन
4 शेबा की रानी मकेडा और राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
5 राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
6 बंगाल की लोक कथाऐं — नेशनल बुक ट्रस्ट

नीचे लिखी पुस्तकें रचनाकार डाट आर्ग पर मुफ्त उपलब्ध हैं जो टैक्स्ट टू स्पीच टैकनोलोजी के द्वारा दृष्टिबाधित लोगों द्वारा भी पढ़ी जा सकती हैं।

1 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/08/1-27.html
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/08/2-1.html
3 रैवन की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1.html
4 रैवन की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/09/2-1.html
5 रैवन की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/09/3-1-1.html
6 इटली की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1_30.html

7 इटली की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/10/2-1.html
8 इटली की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/10/3-1.html
9 इटली की लोक कथाऐं–4
http://www.rachanakar.org/2017/10/4-1.html
10 इटली की लोक कथाऐं–5
http://www.rachanakar.org/2017/10/5-1-italy-lokkatha-5-seb-wali-ladki.html
11 इटली की लोक कथाऐं–6
http://www.rachanakar.org/2017/11/6-1-italy-ki-lokkatha-billiyan.html
12 इटली की लोक कथाऐं–7
http://www.rachanakar.org/2017/11/7-1-italy-ki-lokkatha-kaitherine.html
13 इटली की लोक कथाऐं–8
http://www.rachanakar.org/2017/12/8-1-italy-ki-lokkatha-patthar-se-roti.html
14 इटली की लोक कथाऐं–9
http://www.rachanakar.org/2017/12/9-1-italy-ki-lok-katha-do-bahine.html
15 इटली की लोक कथाऐं–10
http://www.rachanakar.org/2017/12/10-1-italy-ki-lok-katha-teen-santre.html
16 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_54.html
17 चालाक ईकटोमी
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_88.html
18 नौर्स देशों की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2018/10/1.html
19 नौर्स देशों की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2018/12/2.html

नीचे लिखी पुस्तकें जुगरनौट डाट इन पर उपलब्ध हैं
https://www.juggernaut.in/authors/2a174f5d78c04264af63d44ed9735596
1 सोने की लीद करने वाला घोड़ा और अन्य अफ्रीकी लोक कथाऐं
2 असन्तुष्ट लड़की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
3 रैवन आग कैसे लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
4 रैवन ने शादी की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
5 कौआ दिन लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated on Dec 27, 2018

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **1500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
दिसम्बर **2018**